श्री शिरडी दर्शन

इस वर्तमान् समय में सभी प्राणियों के लिये श्री शिरडी साईबाबा का ही एक मात्र सहारा है । जिस किसी ने उनको हृदय से पुकारा, बाबा ने उनकी पुकार को अवश्य सुना । बाबा के मुखारविंद से निकले हुये वचन.

"जो भी मुझे याद करेगा, भले किंतना ही दूर क्यो न रहता हो उसको मैं अपने संरक्षण में रखकर उसकी रक्षा करुंगा" । यह अक्षराक्षर सत्य प्रमाणित हो रहा है । साई प्रेमियों को अपने अन्त:करण में श्री साईबाबा के प्रति एक बढ़ती हुई भक्ति, विश्वास व प्रेम उत्पन्न करने के लिये श्री साईबाबा के दिव्य जीवनी को नित्य पढ़ते हुये समझकर अपने अन्त:करण में धारण कर लेना चाहिये । बाबा के दिव्य जीवनी का विवरण कुछ लेखकों ने जो बाबा के साथ रहते थे, संतोषप्रद उल्लेख किया है जिनमें श्री अण्णासाहेब डाबोलकर के 'श्री साई सत् चरित्र' श्री वामनराव पटेल के 'श्री साई दी सुपरमैन' श्री गणेश कृष्ण खापरडे के 'शिरडी डायरी' श्री राव बहादुर विश्वनाथ प्रधान के 'श्री साईबाबा आफ शिरडी' दास गणू महाराज के 'भक्तलीलामृत' व

संतकथामृत तथा रघूनाथराव तेडूंलकर के 'श्री साईनाथ भजनमाला' है । इसके अलावा बाबा के समाधि के उपरान्त श्री बी. वी. नरसिंह स्वामी 'दी लाईफ आफ साईबाबा,' आर्थर आस्बार्न 'दी इन्क्रेडीबल साईबाबा' तथा आचार्य ई. भरद्वाज के 'साईबाबा दी मास्टर' बहुत ही श्रद्धा पूर्वक प्रयत्न करते हुये लिखा है । इसके अतिरिक्त श्री साई प्रेमियों के सहुलियत व एक सहारे के लिये श्री साईबाबा के अद्वितीय जीवनी का सार 'श्री साई महिमा' प्रकाशित की गयी है जो कि सर्वाधिक प्रचलित् है विशेषकर विदेशों में अधिक प्रचलित है । इस श्री दिव्य 'साई महिमा' का गायन आडियो कैसेट में भी उपलब्ध है जिसे प्रसिद्ध गायक श्री मनहर उदास ने भी गाया है ।

श्री साई महिमा का पाठ बड़ा ही कल्याण कारी है । इसके अतिरिक्त अब श्री साई प्रेमियों के कल्याणार्थ यह 'श्री शिरडी दर्शन्' प्रकाशित की गई है । इसका प्रकाशन् इसीलिये अनिवार्य है क्योंकि अनेकों साई प्रेमीगण वर्षों से श्री क्षेत्र शिरडी जाते तो है और वहां समाधि मन्दिर, द्वारकामाई तथा गुरुस्थान् को छोडकर उन्हे अन्य स्थानों का महत्व उतना नहीं मालूम है जितना उन्हे मालूम होना चाहिये । श्री क्षेत्र शिरडी में ऐसे अनेकों महत्वपूर्ण स्थान् है जहां

बाबाने अनेकों लीलाअें दिखाई है और अब भी वहां लोग बाबा की लीलाओं का अनुभव कर रहे हैं। श्री साईबाबा ने अपने प्रेमियों के लिये इस दिव्य 'श्री शिरडी दर्शन्' को आदेशानुसार इस तुच्छ सेवक के द्वारा लिखवाकर बड़ा ही उपकार किया है। इसके दैनिक पाठ करने वाले भक्तों को श्री क्षेत्र शिरडी दर्शन् के लाभ के साथ ही साथ श्री साईबाबा की कृपा प्राप्त करने का लाभ अवश्य होगा।

तत्त आत्मा
श्री साई सेवक

श्री शिरडी दर्शन्

श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय।

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की।
जिस शिरडी में डोल रहें हैं,
अब भी साई नाथजी॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम॥१॥

यहां है मन्दिर खण्डोबा का,
माल्सा जिसके पुजारी थे।

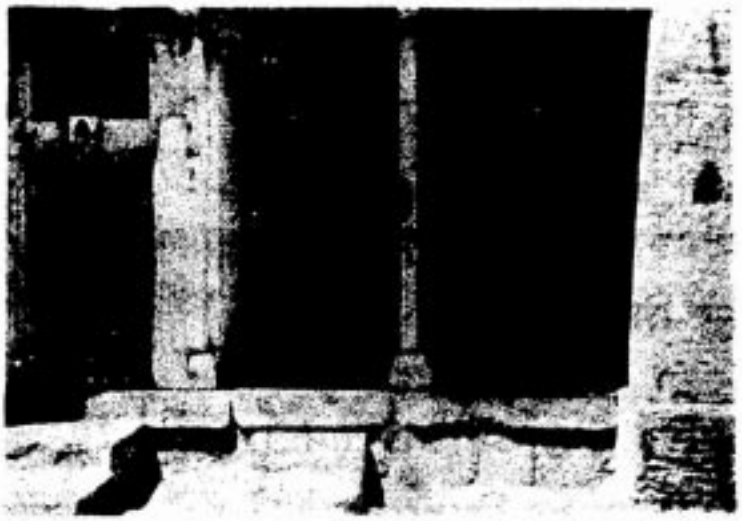

यहां है मन्दिर खण्डोबा का,
माल्सा जिसके पुजारी थे ।

बाबा को यहां नाम मिला,
साईबाबा नाम पड़ा ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।२।।

यहां है पावन गुरु स्थान,
जहां है वृक्ष नीम का ।
जिनके पत्ते मीठे बने,
ऐसे साई शक्ति से ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।३।।
यहां है पावन हरी चरण,
अद्‌भुत शिव की पिण्डी भी ।

यहां जो साई चित्र है,
सबके मन को भाता है ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४॥

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथजी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५॥

यहां है मस्जिद शिरडी का,
द्वारकामाई कहते हैं ।

सबने देखा बडी ही लीला,
ऐसे द्वारका माई में ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।६।।

यहां जो पत्थर का आसन्,
साई का ही सिंहासन ।
साई का था वह आसन्,
पत्थर का ही वह आसन् ।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।७।।

साई का यहां चित्र देखो,
द्वारकामाई कहते हैं ।।
अब भी बाबा दर्शन् देते,
द्वारकामाई चित्र से ।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।८।।

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथ जी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।९।।

बालाजी के अनाज को देखो,
गोनी में जो भरा है ।
साई को वह दान दिया,

हरदम देता रहता था ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।१०।।

यहां जो चक्की पत्थर का है,
प्रयोग साई करते थे ।
इसी से हैजा को रोका,
पावन शिरडी आने में ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।११।।

ज्योतियों के स्थान् को देखो,
साई लीला जहां घटी ।
ज्योतियों में पानी भरकर,
साई ज्योति जलाई ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।१२।।

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साईनाथजी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।१३।।

पानी का यहां घड़ा देखो,
पानी साई भरते थे ।
प्यासे पानी पीते थे,
हरदम साई देते थे ।।

ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥१४॥

कोलम्बा का पात्र देखो,
भिक्षा जिसमें रखते थे ।
कोलम्बा का प्रसाद कहकर,
साई सबको देते थे ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥१५॥

यहां है धूनी साईश्वर की,
हरदम देखो जलती है ।
कर्मो को जलाती है,
दुखों को मिटाती है ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥१६॥

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथजी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥१७॥

इस धूनी का जो ऊदी है,
हर कष्टों को हरती है ।
साई शक्ति इसमें है,
सबकी रक्षा करती है ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥१८॥

चरण जहां है चांदी का,
वहां ही बाबा बैठते थे ।
वहीं से उदी देते थे,
सबको आशिश देते थे ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।१९।।

पावन द्वारकामाई में,
साई ने समाधिली ।
साईजी ने समाधिली,
एसे द्वारकामाई में ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।२०।।

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथजी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।२१।।

फर्श में देखो कूर्म अवतार,
स्वेच्छा मरण का वह स्थान् ।
जागृत हो गये साई नाथ,
स्वेच्छा मरण के उपरान्त ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।२२।।

यहां है तुलसी वृन्दावन,

जिसे साई ने लगाया ।
साईजी ने लगाया,
तुलसी पूजा करने को ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २३ ।।

चूल्हा का भी स्थान को देखो,
खाना जहां बनाते थे ।
सबका खाना बनता था,
प्रेम से सभी खाते थे ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २४ ।।

आओ भक्तों दर्शन करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अब भी साईनाथ जी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २५ ।।

लकड़ी का वह खम्बा देखो,
चूल्हा के जो निकट है ।
जो भी उसको स्पर्श करता,
उसका पीड़ा हरता है ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २६ ।।

रथ का यहां कक्ष देखो,
जहां साई का रथ है ।

पालकी का दर्शन करो,
पालकी के कक्ष में ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २७ ।।

सूर्य दर्शन् करते थे,
जहां है साई का चरण ।
साई दर्शन् पाते थे,
जहां है साई का चरण ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २८ ।।

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडीमें डोल रहे हैं,
अब भी साईनाथ जी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। २९ ।।

सीड़ियों के बाजू देखो,
अलग ही सीडियाँ बनी हैं ।
तीनों सीडियों का प्रयोग,
साईबाबा करते थे ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३० ।।

यहां है चावड़ी नाथ की,
जहां साई रहते थे ।
रहते थे साई, रहते थे,
हर दूसरे दिन रहते थे ।।

यहां है चावड़ी नाथ की,
जहां साई रहते थे ।

ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥ ३१ ॥

शिरडीवासियों ने किया,
चावडी में आरती ।
सबसे पहला आरती
साई जी की आरती ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥ ३२ ॥

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।
जिस शिरडी में डोल रहे हैं,
अबभी साईनाथ जी ॥

ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३३ ।।

लक्ष्मीबाई का यहां कुटिया,
दर्शनीय स्थान् है ।
नौ चांदी के सिक्के हैं,
साईजी के हाथ के ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३४ ।।

नौ विधा की भक्ति है,
साई के इन रुपयों में ।
साई के इन रुपयों में,
नौ विधा की भक्ति है ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३५ ।।

म्हाल्सा का समाधि देखो,
बाबा के थे परम भक्त ।
यहां हैं बाबा के रुपये,
कफनी, छड़ी व पादुका ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३६ ।।

आओं भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।।
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथ जी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३७ ।।

लेंडी जंगल तेरा बगीचा ....

यहां के लेंडी बाग को देखो,
नाथ की तपो भूमि है ।
तप तपस्या की साई ने,
ऐसी लेंडी बाग में ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३८ ।।

लेंडी का जो नीम वृक्ष,
साई ने ही लगाया ।
यहां के पीपल वृक्ष को,
साई ने ही बचाया ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।। ३९ ।।

लेंडी का जो कुंआ है,
बाबा ने ही बनाया ।
कुयें के इस जल को,
उत्पन्न किया बाबा ने ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४०॥

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ॥
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथ जी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४१॥

दत्तात्रय का मन्दिर देखो,
घोड़ा का भी समाधि ।
बाबा का वह घोड़ा था,
श्याम सुन्दर नाम था ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४२॥

लेंडी बाग के बाहर देखो,
पांच महान् समाधि ।
तात्या पाटिल, भाहुकुम्भार,
अय्यर, नाना, हाजी का ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४३॥

बूटी का यहां वाड़ा देखो,
जिसमें समाधि मन्दिर है ।

साई का ही समाधि,
ऐसे समाधि मन्दिर में ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४४॥

आओं भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ॥
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथ जी
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥४५॥

बाबा का यहां मूर्ति देखो,
बाबा को तुम पाओगे ।

बाबा को तुम पाओगे,
बाबा तुम्हें पायेंगें ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।४६।।

बड़ा ही अद्‌भुत है यह मूर्ति,
तालिम जी ने बनाया ।
जीते हुये जाग रहें हैं,
साई ऐसे मूर्ति से ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।४७।।

अभिषेक के जल को पावो,
इसमें साई शक्ति हैं।
रोगों को निवारण करती,
हर कष्टों को हरती है ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।४८।।

आओ भक्तों दर्शन् करें, ।
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ।।
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,
अब भी साई नाथ जी ।।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ।।४९।।

मारुती का मन्दिर देखो,
यहां बाबा आते थे ।
देवीदास व जानकीदास,
यहीं रहा करते थे ।

ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५०॥

गणेश, शनि व शंकर,
यहां के छोटे मन्दिर हैं ।
इन मन्दिरों का देख रेख,
साईजी ही करते थे ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५१॥

लक्ष्मी मन्दिर को भी देखो,
जहां साई गये थे ।
काला कुत्ता था वह रुप,
बाला गणपत ने देखा ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५२॥

आओ भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ॥
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,।
अब भी साईनाथ जी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५३॥

शिरड़ी धरती की यह मिट्टी,
बड़ी ही पावन मिट्टी है ॥
जिस धरती में डोल रहे हैं,
अब भी साईनाथ जी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५४॥

साई नारायण कहता है,

शिरडी का जो धाम है ।
साईश्वर का धाम है,
एक ही सबका धाम है ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५५॥

शिरडी दर्शन् की यह महिमा,
जो भी नित्य गायेगा ।
साईजी को पायेगा,
हरदम पाते रहेगा ।
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५६॥

आओं भक्तों दर्शन् करें,
तीरथ शिरडी क्षेत्र की ॥
जिस शिरड़ी में डोल रहे हैं,
अब भी साईनाथ जी ॥
ॐ साई राम, ॐ साई राम ॥५७॥

श्री सच्चिदानन्द सदगुरु साईनाथ महाराज की जय ।